



0974CH06

षष्ठ अध्याय

उपसर्ग

धातु रूपों तथा धातुओं से निष्पन्न शब्दरूपों से पूर्व प्रयुक्त होकर उनके अर्थ का परिवर्तन करने वाले शब्दों को उपसर्ग कहते हैं—

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।

प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत्॥

उपसर्गों के जुड़ने से पद का अर्थ बदल जाता है, यथा— हार शब्द का अर्थ है— 'माला', परन्तु जब उसमें 'प्र' उपसर्ग लगता है तो शब्द बनता है 'प्रहार' और उसका अर्थ होता है— मारना। इसी प्रकार 'आ' उपसर्ग लगने पर 'आहार' बनता है, जिसका अर्थ है— भोजना। इसी प्रकार यदि 'हार' शब्द में 'सम्' उपसर्ग जुड़ता है तो 'संहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ है नष्ट करना, परन्तु इसी शब्द में 'वि' उपसर्ग लगने पर 'विहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है— घूमना-फिरना। इसी तरह 'परि' उपसर्ग जुड़कर 'परिहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है— सुधार करना/त्याग करना। इस प्रकार हमने देखा कि अलग-अलग उपसर्गों के जुड़ने से शब्दों के अर्थों में परिवर्तन आ जाता है। उपसर्गों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

उपसर्गप्रयोगेण शब्दनिर्माणम्— एकस्य पदस्य वाक्यप्रयोगः

- | | |
|---|-----------------------------|
| 1. प्र — प्रभवति, प्रकर्षः, प्रयत्नः, प्रतिष्ठा | गङ्गा हिमालयात् प्रभवति। |
| 2. परा — पराजयते, पराभवति, | सैनिकः शत्रून् पराजयते। |
| 3. अप — अपहरति, अपकरोति, | चौरः धनम् अपहरति। |
| 4. सम् — संस्करोति, सङ्गच्छते, | अध्यापकः छात्रं संस्करोति। |

- | | |
|---------------------------------------|--|
| 5. अनु — अनुगच्छति, अनुकरोति | शिष्यः गुरुम् अनुगच्छति। |
| 6. अव — अवगच्छति, अवतरति, | रामः भवन्तम् अवगच्छति। अवजानाति वा। |
| 7. निर् — निर्गच्छति, निराकरोति | प्राचार्यः कार्यालयात् निर्गच्छति। |
| 8. निस् — निष्कारणम्, निस्सरति | सर्पः बिलाद् निस्सरति। |
| 9. दुस् — दुस्त्याज्यः, दुष्प्रयोजनम् | स्वभावः दुस्त्याज्यः भवति। |
| 10. दुर् — दुर्बोध्यः, दुर्लभः | अयं गूढविषयः दुर्बोध्यः अस्ति। |
| 11. वि — विजयते, विहरति | धर्मः सदा विजयते। |
| 12. आङ् — आकण्ठम्, आजीवनम् | आकण्ठं जलं पीतम्। |
| 13. नि — निगदति, निपतति | पुत्रः पितरं निगदति। |
| 14. अधि — अधिराजते, अधिशेते | विद्वान् सर्वत्र अधिराजते। |
| 15. अति — अतिवादः, अत्याचारः | अतिवादो न कर्तव्यः। |
| 16. सु — सुपुत्रेण, सुशोभते | उद्याने पुष्पाणि सुशोभन्ते। |
| 17. उत् — उड्डयते, उत्पतितः | पक्षिणः आकाशे उड्डयन्ते। |
| 18. अभि — अभिगच्छति, अभ्यागतः | अभ्यागतः सर्वैः सदा पूजनीयः। |
| 19. प्रति — प्रत्युपकारः, प्रत्यवदत् | पुत्री मातरं प्रत्यवदत्। |
| 20. परि — परित्यजामि, परिवर्तनम् | अहं दुष्टं परित्यजामि। |
| 21. उप — उपगच्छति, उपहरति | शिष्यः अध्ययनार्थं गुरुम् उपगच्छति। |
| 22. अपि — अपिदधाति | द्वारपालः द्वारम् अपिदधाति (पिदधाति)। |

किसी भी धातु में उपसर्ग जुड़ने से अर्थ-परिवर्तन होता जाता है, यथा—

*√गम् — जाना

आ + √गम् ⇒ आगच्छति — आना

उप + √गम् ⇒ उपगच्छति — पास जाना

अनु + √गम् ⇒ अनुगच्छति — पीछे जाना

अव + √गम् ⇒ अवगच्छति — समझना

यहाँ हमें यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि जब हमें किसी उपसर्ग युक्त धातु का वाक्य में प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ती है, तब धातुरूप के सामान्य प्रयोग में ही पदनिर्माण करने के पश्चात् निर्मित पद में उपसर्ग को सन्धि-नियमों के अनुसार जोड़ना चाहिए, यथा—

| लकार | धातुरूप | उपसर्ग + धातुरूप |
|-------------|----------|--------------------------------|
| लट् गम् | गच्छति | <u>अनुगच्छति</u> |
| लृट् | गमिष्यति | <u>अनुगमिष्यति</u> |
| लङ् | अगच्छत् | <u>अनुअगच्छत्</u> - अन्वगच्छत् |
| (यण् सन्धि) | | |
| लोट् | गच्छतु | <u>अनुगच्छतु</u> |
| विधिलिङ् | गच्छेत् | <u>अनुगच्छेत्</u> |

* '√' चिह्न धातु का संकेतक है। √गम् अर्थात् 'गम्' धातु।

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. अधोलिखितेषु पदेषु उपसर्गान् धातून् च पृथक् कृत्वा लिखत—

| | उपसर्ग | धातु | क्रियापद |
|------------------|--------|-------|----------|
| i) उत्तिष्ठतु | | | |
| ii) निरगच्छन् | | | |
| iii) निस्सरतु | | | |
| iv) संवदन्ति | | | |
| v) प्रत्यवदत् | | | |
| vi) सुशोभते | | | |
| vii) विशिष्यते | | | |
| viii) अन्वकरोत् | | | |
| ix) प्रसीदामि | | | |
| x) अवागच्छत् | | | |
| xi) उपविशामः | | | |
| xii) उत्थास्यामः | | | |
| xiii) उन्नयनम् | | | |
| xiv) अपाकुर्वन् | | | |
| xv) विजयते | | | |
| xvi) परितुष्यति | | | |

प्र.2. कोष्ठकात् शुद्धपदं चित्वा रिक्तस्थाने लिखत—

- i) हे प्रभो ! मयि । (प्रासीदतु/प्रसीदतु)
- ii) गुरुः शिष्यस्य अज्ञानम् । (उपहरति/अपहरति)
- iii) वानराः जनान् । (अनुकुर्वन्ति/अन्वकुर्वन्ति)
- iv) अहं संस्कृतम् । (अवजानामि/अवाजानामि)
- v) सत्यम् एव वदनीयम् । (आजीवनम्/आजीवनः)
- vi) अध्यापकः प्रश्नान् पृच्छति छात्राः । (प्रतिवदन्ति/संवदन्ति)
- vii) कामात् क्रोधः । (पराभवति/उद्भवति)

- viii) सभायाम् विद्वांसः एव । (सुशोभन्ते/सुशोभन्ति)
 ix) चौरः रात्रौ धनम् । (व्यहरत्/अहरत्)
 x) माता पुत्रः च परस्परम् । (प्रतिवदतः/संवदतः)
 xi) गुरुः आश्रमात् । (प्रविशति/निर्गच्छति)
 xii) नागरिकाः एव स्वदेशम् । (उद्भवन्ति/उन्नयन्ति)
 xiii) वयं चलचित्रं द्रष्टुम् अत्र । (अवागच्छाम/
 आगच्छाम)
 xiv) माता पुत्रम् । (संस्करोति/समकरोति)
 xv) नदी पर्वतात् । (प्रवहति/उद्भवति)

- प्र. 3. i) हारः, योगः इति शब्दाभ्यां सह अधोलिखितान् उपसर्गान् संयुज्य प्रत्येकं पदद्वयस्य निर्माणं कुरुत। निर्मितैः पदैः च सार्थकवाक्यानि रचयत—
 उपसर्गाः— आ, वि, प्र, सु, सम्।
- ii) 'भू' ह, इति एताभ्याम् धातुभ्यां प्राक् अधोलिखितान् उपसर्गान् संयुज्य प्रत्येकं पदद्वयस्य निर्माणं कुरुत। निर्मितैः पदैः च सार्थकवाक्यानि रचयत—
 उपसर्गाः— प्र, अनु, सम्, अप, दुर्